नया ज्ञानोदय

अक्टूबर-दिसम्बर 2023
पृष्ठ 80
मूल्य : 50 रुपये

भारतीय उपमहाद्वीप की कहानियाँ

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

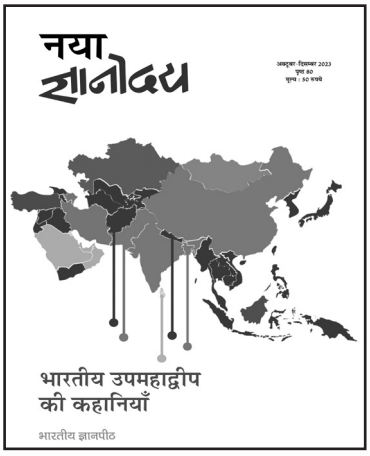

अंक : 224 | अक्टूबर-दिसम्बर 2023

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bjnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Quarterly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्य :
50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :
वार्षिक (4 अंक) : 240 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : संदीप राशिनकर

www.jnanpith.net

गहरी साँस रोके हुए खड़ा पहाड़

—दुष्यंत

समंदर और पहाड़ों के बीच पतली खाड़ी के इलाके में पला-बढ़ा एक लड़का आज दुनिया भर के शब्दप्रेमियों की निगाह में एक सितारे की तरह चमक उठा है। तो इस साल के नोबेल साहित्य पुरस्कार विजेता नार्वे निवासी यून फुस्से को आने वाली पीढियां किस-किस रूप में, किस-किस बात के लिए याद रखेंगी, यह एक दार्शनिक प्रश्न हो सकता है। हम समकालीन लोग किस तरह से याद करेंगे, यह व्यवहारिक, सामयिक प्रश्न है।

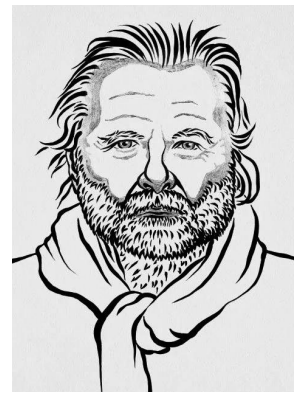

मुझे इस या ऐसे पुरस्कारों की सबसे अच्छी बात यह लगती है कि लेखक को एक दम से खूब बड़ा पाठक वर्ग मिलता है, जो इनके बिना अन्यान्य कारणों से आजीवन सम्भव नहीं होता। उसी की मुबारकबाद या उसी का जश्न मुझे पुरस्कार से भी ज़्यादा बड़े और महत्वपूर्ण लगते हैं। तो यह तय है कि इस पुरस्कार के बाद हम- सब और पूरी दुनिया उनके उपन्यासों को खोजकर पढ़ेगी, परन्तु महत्वपूर्ण यह भी है कि वे बेहतरीन नाटककार हैं। समकालीन दुनिया में सम्भवतः सर्वाधिक खेले जाने वाले नाटकों के नाटककार।

बतौर नाटककार कई उनकी तुलना ब्रेख्त से करते हैं, पर उनके नाटक ब्रेख्त की तरह दार्शनिक नहीं हैं, वे अपने नाटकों में नाटकीयता और तनाव रचने के लिए सतह के नीचे उपस्थित बिखरी बिखरी सी अनुभूतियों, कामनाओं और भावनाओं को शब्द देते हैं। जैसे उनका पहला ही नाटक 'वी विल नेवर बी पार्टेड' (1994) पति के घर आने का इंतज़ार करती स्त्री की कहानी है, और स्मृतियों, विवाह और विवाहेत्तर प्रेम को मानवीय और उदार भाव से टटोलता है। कुछ रंगनिर्देशक उनके नाटकों को 'अति साहित्यिक' कहते हैं। उनके नाटकों की विशिष्ट भाव भूमि के कारण उन्हें असहजता और भय को उजागर करने वाला 'मास्टर' भी कहा गया है। कुलमिलाकर वे नाटक के ठहरे हुए पानी में कंकर नहीं, बड़ा सा पत्थर मारने वाले रहे हैं, यही वजह है कि उन्हें हेनरिक इब्सन के बाद नार्वे के सबसे ज़्यादा मंचित नाटककार माना गया है।

पर उनकी सद्य पुरस्कृत रचनात्मकता के आकाश का एक और हिस्सा भी महत्वपूर्ण है, वह है कविता। उस हिस्से को कोई बादल न ढक लें, इसलिए उसकी बात करना ज़रूरी है और तेजी ग्रोवर के अकेले हिंदी अनुवाद वाले उपन्यास और ऑनलाइन उपलब्ध कुछ कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद से परिचित मेरे जैसे कविमना व्यक्ति की दिलचस्पी यून फुस्से की कविताओं के केवल दो संग्रहों की कविताओं तक पहुंचने में सबसे ज़्यादा होगी, कि जिसे शायद आजीविका की दौड़ ने एक कवि से 'पूर्व कवि' बना दिया। अपनी एक कविता में वे कहते हैं कि पहाड़ सांस रोके खड़े हैं, नीचे की ओर, खुद की तरफ, गहरे सांस रोके हुए पहाड़।

यून फुस्से की पहचान बनाने वाली साहित्यिक कृतियों में प्रमुख 'सेप्टोलॉजी' सात खण्डों में एक महाख्यान है। एक लेखक के रूप में सोचता हूं तो इतने बड़े कथानक को संभालना, निभाना और एक स्तर को बरकरार रखना कितना मुश्किल काम है, ज़रूर लेखक के साथ प्राकृतिक शक्तियां होंगी जो उससे ऐसे वृहद काम करवाती होंगी।

हिंदी में अनुदित होकर, मेरी जानकारी में, उनकी एक ही किताब उपलब्ध है- 'आग के पास आलिस है यह', जिसका अनुवाद तेजी ग्रोवर ने किया है। यह वाणी प्रकाशन से 2016 में आई है। तो अब, यह किताब इस साल हिंदी की सबसे ज़्यादा बिकने वाली किताब हो जाए तो हैरानी नहीं होनी चाहिए।

यून फुस्से के बारे में दो दिलचस्प बातें यह हैं कि वे नार्वे के राजा के महल में रेजिडेंट का ओहदा पाए लेखक हैं, यानी महल में एक निवास उन्हें जीवन भर के लिए दिया गया है। दूसरा, वे 2012 में कैथलिक चर्च में दाखिल हुए, इससे पहले खुद को नास्तिक कहते-मानते थे। विकिपीडिया से पता चलता है है कि अतिशय मयनोशी की वजह से लम्बी बीमारी से निजात पाने की खातिर खुद रिहैब जाने के दिनों में ही धर्म की शरण में भी चले गए थे। कहीं पढा था कि महान अराजकताएँ महान किरदार बनाती हैं, जीवन के असंभव छोरों से साक्षात्कार करवाकर। इसमें महान भूलें, महान गलतियां भी होती हैं तो महान हासिल भी। यून फुस्से भी मुझे उसी सिलसिले के लगते हैं।

नोबेल पुरस्कार के नाम पर सट्टा लगाने वाले यूरोपीय सटोरियों की हर साल चर्चा में रहने वाली सूचियों में यून फुस्से का नाम नहीं था। वैसे भी मुझे लगता है कि सटोरियों की लिस्ट जो हर साल बनती

शेष पृष्ठ 79 पर

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 224
अक्टूबर-दिसम्बर : 2023
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

मधु कांकरिया

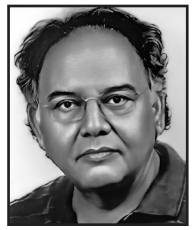
शंकर

रूपसिंह चन्देल

कुलदा रंजन रॉय

असग़र नदीम सैयद

आन्विका गिरी

नोबेल साहित्य पुरस्कार
गहरी साँस रोके हुए खड़ा पहाड़ : दुष्यंत / 02

कहानी
घूमर : मधु कांकरिया / 04
आध कट्ठा जमीन : शंकर / 09
स्ट्रेस : रूपसिंह चन्देल / 13
वामन के तीन पग : हरिनाथ मिश्र / 16
अन्तहीन : अमर स्नेह / 20
एक पिता का जन्म : विद्याभूषण / 25
अम्माँ की चूड़ियाँ : रेनू 'अंशुल' / 28

भारतीय उपमहाद्वीप की कहानियाँ
जूतियाँ : मलीहा नाजी (अफ़गानी) / 32
दीवार पर एक छाप : मासूमा कौसरी (अफ़गानी) / 35
मारखेज की मूर्ति : कुलदा रंजन रॉय (बांग्लादेशी) / 38
रिज़ाना : कलावैथी कलील (सिंहली) / 45
हमारे हीरो वापस करो : असग़र नदीम सैयद (पाकिस्तानी) / 48
तुम नहीं जाओगे : आन्विका गिरी (नेपाली) / 53

उपन्यास अंश
शिरीष को फूल : पारिजात (नेपाली) / 56

सिनेमा
भुवन सोम के बहाने मृणाल सेन : यादवेन्द्र / 58

डायरी के पन्ने
इबारतें : जयशंकर / 61

संस्मरण
एक था कौवा : नरेंद्र गौड़ / 68
अरसा बाद मुसलमानों के एक गाँव में : प्रदीप कुमार / 70

समीक्षा
कहानियों की अपनी ज़ुबान होती है ! : सुधांशु गुप्त / 74
जीवनी लेखन का चरम : विजय शर्मा / 76

लोग बाग
लापता होनेवाले लोग : विष्णु नागर / 78

नोबेल शांति पुरस्कार
मानव अधिकार एक्टिविस्ट नरगिस मोहम्मदी को नोबेल पुरस्कार / 80

ज्ञान गरिमा के 79 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

घूमर

मधु कांकरिया

मधु कांकरिया

जन्मः 23 मार्च, 1957 (कोलकाता)।

शिक्षाः एम.ए. (अर्थशास्त्र)।

प्रकाशित कृतियाँ : उपन्यास- खुले गगन के लाल सितारे, सलाम आखरी, पत्ता खोर, सेज पर संस्कृत, सूखते चिनार; कहानी-संग्रह– बीतते हुए, और अंत में ईशु, चिड़िया ऐसे मरती है, भरी दोपहरी के अँधेरे (प्रतिनिधि कहानियाँ), दस प्रतिनिधि कहानियाँ, युद्ध और बुद्ध; सामाजिक विमर्श– अपनी धरती अपने लोग; यात्रा वृत्तान्त– बादलों में बारूद।

सम्मान/पुरस्कार : श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान, कथा क्रम पुरस्कार, हेमचन्द्र स्मृति साहित्य सम्मान, समाज गौरव सम्मान, विजय वर्मा कथा सम्मान, शिवकुमार मिश्र स्मृति कथा सम्मान, प्रथम विद्या साहित्य सम्मान आदि से सम्मानित।

मो. 9167735950

वह देश में नोटबंदी और मुँहबंदी का ज़माना था, जिसका असर उन घरों में भी हो रहा था जिनकी कहानी कही जा रही है। ज़माने के ऐसे ही एक घर में दिन की आखिरी धूप में, उस वर्ष की सबसे मोहक और सबसे भयानक घटना एक साथ घटी थी। मोहक इसलिए कि जत्न से संजोई एक मुराद आज पूरी होने जा रही थी, मीरा की बेटी सुहानी के सुहाने सपनों के साकार होने का दिन था वह। भयानक इसलिए कि हॉस्पिटल गए थे वे चार, पर दिन के आखिरी छोर में लौट कर आए थे तीन– लोग पूछेंगे तो क्या जवाब देगी वह? भीतर दबे अनकहे ज्वालामुखी को फटने से बचाने के लिए अस्पताल से लौटते ही वह सीधे नहानघर पहुँची, नहानघर के प्रति कृतज्ञ थी वह। पिछले दस दिनों की एक एक घटना, एक एक दृश्य जैसे चीख चीख कह रहे थे कि यह जीवन बचाया जा सकता था, बिल्कुल बचाया जा सकता था पर वहीं चूक गयी। ओंठों को गोल कर लगातार गर्म गर्म भांप छोड़ती रही वह कि धुआँ कुछ तो कम हो। धरती धूज रही थी उसके आगे। निढाल हो जमीन पर धंस गयी वह। ऊफ! कैसी चरम विवशता! जीवन का पहला मृत्यु दुःख! आषाढ़ की पहली बारिश के पहले बादलों सा बार बार उमड़ घुमड़ आता दुःख और जी भर रो लेने की इज़ाज़त नहीं। उसने चाहा था कि आँख मूँद आँसुओं और हाहाकार को मुक्त बहने दे वह पर आँखों के मूंदते ही चमक उठता ढहते मेघेन का निचुड़ा सा चेहरा और ऊपर की ओर उठी हुई निष्प्राण मुंदी हुई वे आँखें जो कभी जीवन से भरी रहती थीं। उड़ान भरते भरते जैसे एकाएक पंख टूट गए हों और अब पल पल फैल रहे हों अवसाद के डैने!

उफ़! काश दो दिन और जीवित रह जाता मेघेन!

दुःख यह नहीं कि मेघेन गया। दुःख था कि काश उसकी आत्मा शांति से उसके शरीर को छोड़ पाती। स्वप्न था कि मस्त उड़ान भरते हुए एक दूसरे को अलविदा कहेंगे पर हकीकत में अलविदा तक न कह सकी। अंदर ही अंदर दरक रहा था वह पहाड़ और उसे अहसास तक नहीं हुआ!

कितना कुछ है जो दृश्य के बाहर छिपा रहता है सोच रही है मीरा! ! शादी के लिए इतनी दौड़-धूप कर रहा था मेघेन शुरू शुरू में उसे अच्छा लग रहा था पर नहीं भी लग रहा था। अरे भाई शादी है कोई युद्ध नहीं! मन ही मन सोचती पर भोली आँखें देख नहीं पायीं कि मौत जाल बिछा रही थी। चिंता की चिड़िया चोंच मारती रही पर उम्मीद से भरी रही वह और अंजुली के जल सा बह गया मेघेन। रह गया पछतावा!

ज़िंदगी की ठोकर ने ज़िंदगी पर उसकी राय को बदल दिया है। विचार बदल रहे हैं, जन्म ले रहे हैं नए विचार-कितनी बनावटी है ज़िंदगी! हर पल मुखौटा! उफ़! क्यों लेने दिया उसने इतना कर्जा! क्यों होने दिया वह सब जो नहीं होना था। माना, उसकी ट्रेवलिंग एजेंसी ठीक ठाक चल रही थी फिर भी क्या जरूरत थी हैसियत से बढ़कर हैसियत दिखाने की? होने में नहीं, दिखने में क्यों विश्वास करता है आदमी? कैसा समय! छिलका ही गूदा हो गया है। हे देव! समय रहते चेत जाती तो यह चूक तो नहीं होती! नहीं होता बीपी इतना हाई! इतनी मोटी बात भी क्यों नहीं समझ पायी वह कि बिना दिखावे के भी सब कुछ कितना तो खूबसूरत चल रहा था। हल्की-हल्की लहरें बीच बीच में उठ रही थीं पर जीवन शांत था। जीवन का असली आनंद तो वही था।

पर समय के माया जाल में फँस गयी वह। समय तेजी का था। तेजी युग सत्य था। मौसम में तेजी। महंगाई में तेजी, औपचारिकता में तेजी, दिखावे में

तेजी, भाषणों में तेजी, वादों में तेजी! बाजार में तेजी।

कतरा कतरा समय की किरचें लहूलुहान कर रही थीं उसे– क्यों नहीं चेती वह जब खतरे के स्याह मेघखंड इकट्ठे हो रहे थे मेघेन के इर्द-गिर्द। जब मौत चमक रही थी किसी स्वप्न भरी आँखों की तरह पर वह गाफिल रही। शादी के खर्च और ज़िंदगी में पहली बार लिया कर्जा मेघेन की स्वाभिमानी आत्मा को चूहे की तरह कुतर रहा था। उसका ब्लड शुगर और वीपी दोनों ही खतरे की सीमा छू रहे थे। जब बोलते बोलते हाँफने लगा था वह तभी जैसे आकाशवाणी हो गयी थी। आधा तभी मर गया था। लेकिन बेईमान मन और जीवन की घिस घिस ने इतना घिस दिया था उसे कि कुछ भी नहीं व्यापा, नहीं सुनी मन की आवाज़? भोले मध्यवर्गीय आशावाद और नियतिवाद ने जैसे सब आशंकाओं पर पोंछा लगा उम्मीद से लबालब भर दिया था उसे। बेटी की शादी की ख़ुशी की चादर में जैसे ज़िंदगी के सारे छिद्र ढक गए थे। स्वप्न और यथार्थ के दोराहे पर खड़ी मीरा ने बहने दिया मेघेन को भी ज़िंदगी के तेज प्रवाह में। जिम्मेदारियों के तीव्र अहसास ने न मेघेन को मेघेन रहने दिया न मीरा को मीरा।

नतीजा?

भूसा रह गया, तत्व निकल गया। वह स्थूलताओं में घिरी रही और वह ढह गया। किनारा करीब आ ही रहा था कि छूट गयी पतवार।

पीड़ा का समुद्र हिलोरें ले रहा है भीतर काश समय में वापस जाकर उन पलों को लौटा लाती वह। काश ज़िंदगी में भी होता कोई रिवाइंड बटन। काश अपने घर कोलकाता से ही किया होता विवाह! पर समधी समधन का आग्रह! उसने तो हल्के से आनाकानी भी की कि रिवाज़ तो यही है कि बरात उनके द्वार पर आए, पर नहीं नहीं नहीं नहीं। समधी नहीं माने। ठुकरा नहीं पाए उनका आग्रह। अब जिस घर में जन्म भर के लिए बेटी को रहना है उनके आग्रह का तो मान रखना ही था। आज अहसास हो रहा है उसे कि वह सब अधूरे सत्य थे। असली था जीवन, सबसे ऊपर था जीवन। मना कर देना था उसे, माना मेघेन थे घर के मुगले आज़म पर वह यदि दृढ रहती तो मानना पड़ता मेघेन को। मेघेन जरूर सुनते उसकी मन की बात! और इतनी झुलसती गर्मी में नहीं आना पड़ता दिल्ली। गर्मी तो कोलकाता में भी पड़ती है पर दिल्ली की गर्मी दिमाग के अंदर घुस जाती है। उफ़! ज़िंदगी की सबसे बड़ी भूल हुई उससे। पर आत्मविश्वास उसी का धक्के खा रहा था, साथ ही विवेक बुद्धि भी, माना अगले आठ महीने तक कोई मुहूर्त ही नहीं था और दोनों ही पक्ष इसे टालने के पक्ष में नहीं थे। फिर समधी जी का आश्वासन-आप सिर्फ़ बारात की खातिरदारी की जिम्मेदारी सँभाल लें, गीत संध्या और शादी की सारी जिम्मेदारी हमारा इवेंट मैनेजर सँभाल लेगा।

आश्वासन भला भी था!

और बुरा भी!

भला था कि परिवार की पहली शादी टनाटन हो यह सत्य किसी बेताल की तरह उसकी पीठ पर ही नहीं उसकी चेतना पर भी हावी था। बुरा था कि मेघेन का स्वास्थ्य इसके भी लायक कहाँ था? क्या मिला इतनी उतावली कर? न गेह बचा, न देह, न नेह। बहरहाल

शादी के लिए बन्ना बन्नी गाते गाते और बंद खिड़की के काँच से पटरी पर पॉटी करते देशवासियों को गाहे बगाहे देखते देखते वे कोलकाता से दिल्ली आए। घर से शादी के निमित्त लिए गए 'सुरुचि भवन में पहुँचे भर थे कि लोडशेडिंग!

गर्मी इतनी कि लोगबाग मिलते तो 'जय राम जी की!' कहने की बजाय कहते 'उफ़ कितनी गर्मी है! रुक जाना था उसे नीचे ही कहीं! पर जगह जगह बिखरे काम, सफर की थकावट, पोर पोर में चिंता, सूरज के ताप और गुल बत्ती ने जैसे दिमाग को ही सुन्न कर दिया था, देख ही नहीं पायी इन सबके बीच जर्जर हो चुकी नाव को। बाघ की तरह झपट्टा मारती जानलेवा धूप ने जैसे संवेदनाओं को ही सुखा डाला था।

दिखी तो उसे सिर्फ़ जिमेदारियाँ, दिखावे और औपचारिकताओं की बर्फीली सिल्लियाँ जो हिमालय बन खड़ी थीं सामने जिसने बादलों से झूमते लहराते मेघेन को मेघेन नहीं बैल बना दिया था।

धरती धधक रही थी साथ ही वह। फिर भी वे पैदल ही चढ़ गए सात मंजिल। उसने भी नहीं रोका। अगली शाम गीत संध्या थी उसकी तैयारी और अगले के अगले दिन शादी! होने दिया उसने जो हो रहा था क्यों नहीं सोचा कि सबसे ऊपर जीवन है पर सोचने का वक्त ही कहाँ बचा था। दुश्चिंताओं को कुछ दिनों के लिए तह कर रख लिया। नकली चिंता में असली चिंता को खड़े रहने की जगह ही नहीं मिली। शरीर तो लगातार दिखा रहा था लाल बत्ती। एक के बाद एक योजनाएँबना रहा था मेघेन इस बात से बेखबर कि ज़िंदगी उसके लिए अंतिम योजना बना चुकी थी।

बस अंत की शुरुआत शायद तभी से हो गयी थी।

उन दो दिनों ने ज़िंदगी के सारे रंग दिखा दिए थे मीरा को। रात सी